विकास का परिचय
INTRODUCTION OF DEVELOPMENT

1.1. जीवन काल परिप्रेक्ष्य (LIFE SPAN PERSPECTIVE)

1.1.1. जीवन काल परिप्रेक्ष्य/ विकास की अवधारणा (Concept of Lifespan Perspective/ Development)

जीवनकाल विकास में सम्पूर्ण जीवन काल के दौरान होने वाले जैविक, संज्ञानात्मक एवं मनोसामाजिक परिवर्तनों एवं स्थिरताओं की खोज शामिल है। जीवन काल विकास (Lifespan Development) आयु से सम्बन्धित परिवर्तनों को सन्दर्भित करता है जो एक व्यक्ति के जीवन में, जन्म से लेकर वृद्धावस्था के दौरान होते हैं। इसमें केवल विकास के जैविक और भौतिक पहलू ही शामिल नहीं हैं, बल्कि विकास से जुड़े संज्ञानात्मक और सामाजिक पहलू भी शामिल हैं। जर्मन मनोवैज्ञानिक पॉल बाल्ट्स, जो जीवन काल के विकास और उम्र बढ़ने के एक प्रमुख विशेषज्ञ हैं, ने विकास का अध्ययन करने के लिए एक दृष्टिकोण विकसित किया जिसे जीवन काल परिप्रेक्ष्य कहा जाता है। विकासात्मक मनोविज्ञान, जिसे मानव विकास (Human Development) या आजीवन विकास (Lifespan Development) के रूप में भी जाना जाता है, उन तरीको का वैज्ञानिक अध्ययन हैं जिसमें यह समझने तथा समझाने का प्रयास किया जाता है कि लोग जीवन भर (गर्भाधान से मृत्यु तक) कैसे और क्यों बदलते हैं। विकास का वैज्ञानिक अध्ययन न केवल मनोविज्ञान के लिए, बल्कि समाजशास्त्र, शिक्षा एवं स्वास्थ्य देखभाल के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। लोग कैसे और क्यों बदलते और बढ़ते हैं, इसे बेहतर तरीके से समझकर, इस ज्ञान को लोगों को उनकी पूरी क्षमता से जीने में सहायता करने के लिए लागू किया जा सकता है।यह क्षेत्र मोटर कौशल और अन्य मनो–शारीरिक प्रक्रियाओं सहित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला में परिवर्तन की जांच करता है।

जीवन काल विकास में कई मुद्दे शामिल हैं जैसे, निरन्तरता एवं निर्लिप्तता, स्थिरता एवं परिवर्तन, प्रकृति बनाम पोषण आदि। कई शोधकर्ता व्यक्तिगत विशेषताओं, व्यक्ति के व्यवहार एवं सामाजिक संदर्भ सहित पर्यावरणीय कारकों एवं विकास पर उनके प्रभाव के बीच बातचीत में रुचि रखते हैं।

अमेरिकन जर्नल ऑफ क्लिनिकल न्यूट्रीशन के अनुसार, मानव जीवन काल, या मानव जीवन के लिए अधिकतम संभव समय, 130 वर्ष है। मानव शरीर समय के साथ काफी बदल जाते हैं एवं भोजन उन परिवर्तनों के लिए ईंधन का काम करता है। पूरे मानव जीवन चक्र के दौरान, शरीर लगातार बदलता रहता है और विभिन्न अवधियों के माध्यम से जाना जाता है।

"परिवर्तन का प्रतिरूप जो गर्भाधान से शुरू होता है एवं जीवन चक्र के माध्यम से जारी रहता है, जीवन काल विकास कहलाता है।"

एजुकेशनल फाउंडेशन, 2001 के अनुसार, जीवन काल विकास एक प्रक्रिया है जो गर्भाधान से शुरू होती है एवं मृत्यु तक जारी रहती है।